http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 11, 39-41

Article ID:509

केंचुआ खाद : एक जैविक विकल्प

योगिता बाली,
प्रियंका काटवा, रेणु देवी

कृषि विज्ञान केंद्र, भिवानी
शस्य विज्ञान, CCSHAU, हिसार
कृषि विज्ञान केंद्र , सिरसा

*अनुरूपी लेखक
योगिता बाली*

कृषि क्षेत्र में लगातार बढते रसायनिक उपयोग के कारण पैदावार में लगातार वृद्धि हुई है परन्तु भूमि की उपजाऊ शक्ति धीरे-धीरे घटती जा रही है इससे कई प्रकार की भूमि सम्बंधित परेशानी आ रही है। जैसे सूक्ष्म जीवाणु की कमी, मृदा की घटती उपजाऊ शक्ति, भूमि जल का प्रदूषित होना और आसपास के वातावरण के स्तर का निरंतर गिरना। भोजन की शुद्धता में भी कमी आई है। इन सभी कारणों के कारण " केचुआ खाद –एक जैविक विकल्प " जो भूमि को भुरभुरा एवं उपजाऊ बनाता है। इसमे मौजुद जीवाणु एवं सूक्ष्म तत्व पौधों को पोषक तत्व प्रदान करते है । जड़ों को फैलाव अधिक करने में भी सहायक है। और प्राक्रतिक संपदा का भी संरक्षण करते है। कार्बोनिक पदार्थों की वृद्धि कर फसलों के विकास में अहम भूमिका निभाते हैं।
केंचुआ खाद, एक जैविक खाद है जिसमे सभी तत्व प्रकार्तिक है और कोई रसायन का प्रयोग नहीं किया जाता हैं। ये एक आई.एफ.एस का महत्वपूर्ण कॉम्पोनेन्ट भी हैं। जिसमें पशुओ, फसलों , फल-सब्जिओ एवं केंचुआ का उपयोग कर तैयार किया जाता हैं। इसमे नाइट्रोजन, फस्फोरस, पोटाश आदि पोषक तत्व पाये जाते हैं, जिससे फसलो की गुणवत्ता के साथ मृदा की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाने में सहायता मिलती हैं। केंचुआ ज़मीन को भुरभुरा कर वायु, जल एवं जीवाणु की गतिविधियों को बढ़ा देता हैं

केंचुआ खाद तैयार करने की विधि :-

1. सामान्य विधि:-

इसमे बेड का आकार किसान की आवश्कता अनुसार रखा जा सकता है प्रत्येक बेड की लम्बाई 3 मीटर,1 मीटर चौड़ाई एवं 30 से 50 सेंटीमीटर ऊंचाई, बेड तैयार करने के लिए ईंटों और सीमेंट का प्रयोग कर बनाया जाता है। सीधे धूप और भरी बारिश से बचाएं, केचुओं के प्रजनन के लिए उन्हें अँधेरे में रखना या किसी बोरे से ढकना अत्यंत आवश्यक हैं ।

सामग्री का उपयोग:-

इसमें किसी प्रकार की महंगी वस्तुओं का उपयोग नहीं होता अपितु रोजमर्रा में उपयोग की जाने वाली वस्तुएं का ब्यप्रोदक्ट इस्तेमाल में लाया जा सकता हैं जैसे ;- फल-सब्जियों के छिलके, फसलों का तुड़ा, गोबर आदि।

तैयार करने की विधि :-

इन सभी पदार्थो को बेड में डाल 15 से 20 दिन तक सड़ने के लिये छोड दे। जब तक अधगले सा रूप न ले ले। उसके 3-4 से दिन बाद केंचुए छोड़ दे । हल्का पानी छिड्ककर बेड को बोरियों से ढक दे। एक टन कचरा से 0.6 से 0.7 टन केंचुआ खाद प्राप्त हो जाती हैं।

2. गढ़ा विधि :-

इस विधि के अनुसार, गड़े को खोदे और उसकी लम्बाई ,चौड़ाई और ऊंचाई 1Lx1Lx2.5 होनी चाहिए, फिर इस में पक्की दीवारबना चार बराबर भाग में बाँट ले। फिर एक –एक करके सभी गढ़ो को फल-सब्जिओ व फसलों के अवशेषों से भर कर, पानी छिड्क दे, और किसी भी बौरे या पॉलिथीन से ढक दे। जब समस्त अवशेष नरम पड़ जाये तो केंचुए छोड़े, धीरे-धीरे केंचुए अपने आप एक दुसरे गड्ढे में प्रवेश कर लेगे। जब पहले गढ़े की खाद तैयार हो जाएगी, तब केंचुए स्वयं ही दुसरे गढ़े में चले जायेगे, इस तरह क्रम अनुसार तरीके से खाद तैयार हो जाएगी। फिर पुनः गड्ढे को उसी क्रम से भरना शुरू कर दे।

महत्वपूर्ण कार्य :-

1) केंचुआ खाद बनाने के लिए फल-सब्जी, गोबर एवं फसलों के अवशेष का प्रयोग करे।
2) मोटे अवशेष को छोटे-छोटे टुकड़ो में काट ले ताकि जल्दी गल जाये।
3) अवशेष पर पानी का छिडकाव समय-समय पर करते रहे अन्यथा इसे गलने में समय अधिक लगेगा।
4) सभी अवशेषों को परत दर परत डाले। अब अवशेष नरम हो जाये तब इसमें लगभग 5000 केंचुए या 500 ग्राम की दर से केंचुए तथा कोकून बेड की एक तरफ डाले। और वह अपनेआप फैल जायेगे।
5) जब खाद तैयार होने लग जाये तो धीरे-धीरे पानी कम कर दे, ताकि केंचुए सतह की तरफ जाने लगे तो ऊपर से खाद निकल ले। जब नमी 30 -40 प्रतिशत तक रह जाये तो

एच.डी.पी.ई. थैले में सील करके पैक कर ले, ताकि इसकी नमी बनी रहे।

सावधानिया :-

1 केंचुआ खाद का उपयोग करने के बाद किसी तरह की रासयनिक खाद व कीटनाशक दवा का उपयोग न करे।

2 खेतो में उचित नमी बनाये ताकि केंचुए क्रियाशील रहे।

महत्व :-

इस खाद के उपयोग से मिट्टी का pH संतुलित रहता है।

पौधो की जड़ो के लिए उचित वातावरण बना रहता है, जिससे उनका अच्छा विकास व फैलाव होता है।

जल संरक्षण में भी उचित भूमिका निभाते है।

प्राय: देखा गया है, की पौधों में रोग कम लगते है साथ ही फसलो को पर्याप्त पोषक तत्व सरलता से उपलब्ध हो जाते है